भाषा विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

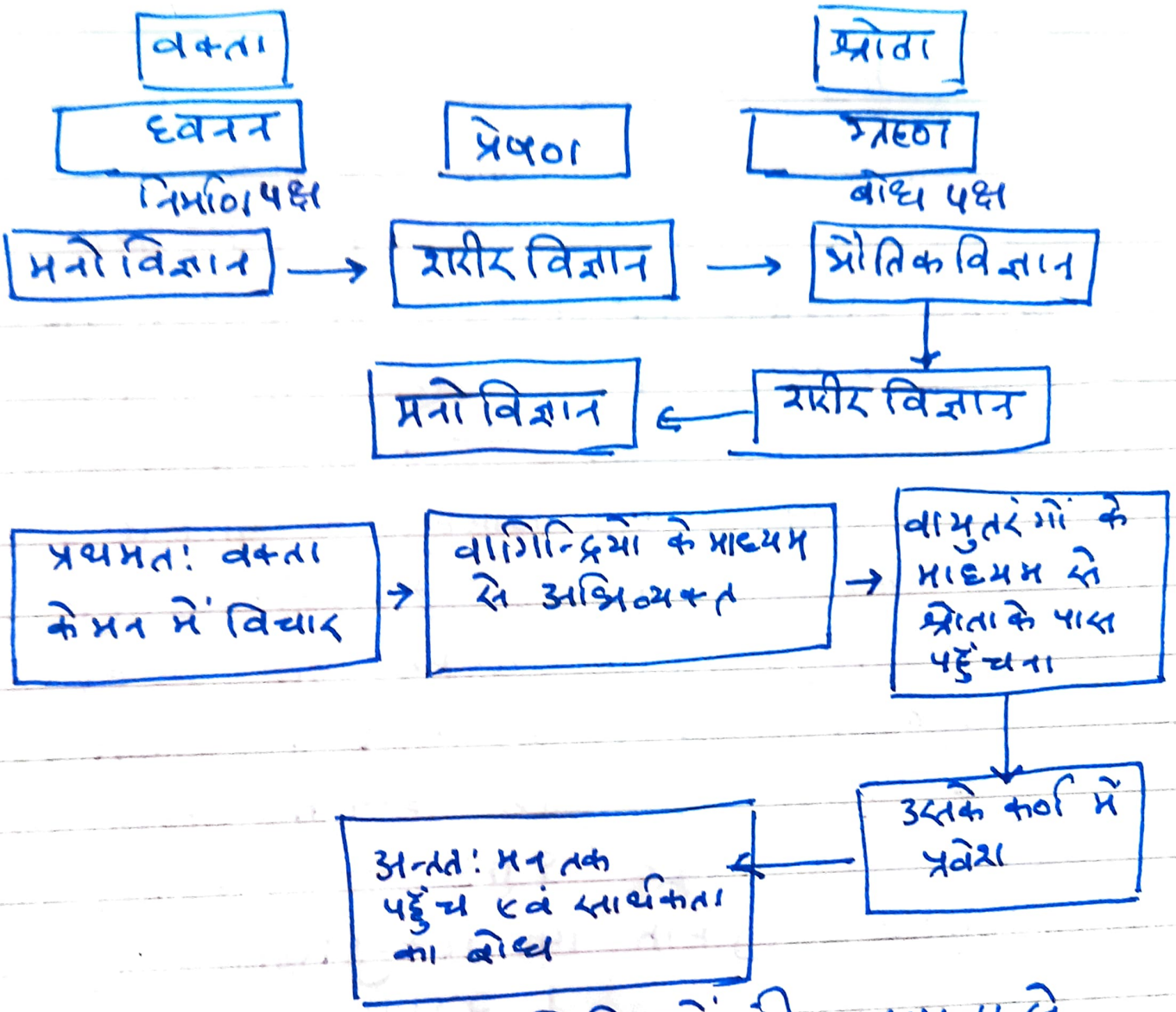

① मन में उत्पन्न भाव वागिन्द्रियों की सहायता से कैसे अभिव्यक्त होते हैं यह ठीक-ठीक तभी जाना जा सकता है, जब वागिन्द्रियों की रचना स्थिति का बोध ठीक से हो। किस तरह फेफड़ों से निकलती वायु स्वरतंत्री, कंठ, तालु, नासिका विवर आदि स्थानों से टकराकर विभिन्न ध्वनियों का रूप धारण करती है यह शरीर की रचना और क्रिया के ज्ञान से सम्बद्ध है। क्या कारण है कि ध्वनि कहीं अनुस्वार है तो कहीं अनुनासिक; कंठ, तालु आदि

स्थानों से टकराकर विभिन्न ध्वनियों का रूप धारण करती है, यह शरीर की रचना और क्रिया के ज्ञान से सम्बन्ध है। वायु कहीं च, कहीं ट, तो कहीं व, कहीं स्वर, कहीं व्यंजन, कहीं सघोष, कहीं अघोष, कहीं अनुस्वार, कहीं अनुनासिक। यह शरीर विज्ञान से परिचित व्यक्ति ही अच्छी तरह समझ सकता है।

जैसे वागिन्द्रिय का प्राकृतिक उपयोग भिन्न है — ओठ, दाँत — आगे-पीछे, जीभ, फेफड़ा आदि की भूमिका को मनुष्य ने भाषा के निर्माण में प्रयोग किया, यह मनुष्य जाति की बौद्धिक क्षमता की उपलब्धि है, वह इनके माध्यम से ध्वनियों के निर्माण एवं विकास में सन्नद्ध रहा है — संगीत का निर्माण, स्वरों का आरोह - अवरोह, लय, यह सब शरीर विज्ञान की समझ रखने वाला नहीं कर सकता।

शब्द का उच्चारण — वागिन्द्रिय

" " श्रवणेन्द्रिय

व्याकरण –

① किसी भाषा के नियम एवं व्यवस्था का अध्ययन करता है, वह यह नहीं विचार करता कि कोई रूप क्यों, कैसे और कब बना, यह भाषा विज्ञान का कार्य है। यह भाषा सम्बन्धी 'क्या' का जवाब दे सकता है, किन्तु 'क्यों' का नहीं। 'क्यों' का सम्बन्ध भाषा विज्ञान का है। भाषा विज्ञान भाषा के निष्पन्न रूप का कारण बताता है

② व्याकरण इसी अर्थ में विवरणात्मक या वर्णनात्मक भाषा विज्ञान है, क्यों कि इसका काम विवरण या वर्णन प्रस्तुत करना है। व्याकरण भाषा के निष्पन्न स्वरूप का वर्णन मात्र करता है।

③ भाषा के नियम का ज्ञान व्याकरण के लिए आवश्यक है, किन्तु व्याकरण के नियमों का ज्ञान और विश्लेषण भाषा विज्ञान की जरूरत है।

④ व्याकरण का सम्बन्ध भाषा-विशेष से है, काल-विशेष से है अर्थात् व्याकरण के अन्तर्गत किसी भाषा के काल-विशेष में प्रचलित नियमों की संहिता का अध्ययन किया जाता है।

भाषा विज्ञान का सम्बन्ध सभी भाषाओं से है, उसके नियम व्यापक और स्थायी होते हैं

किन्तु यह भी ध्यान देने योग्य है कि व्याकरण के अन्तर्गत दो भाषाओं के व्याकरण (संस्कृत - लातिन) का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है, किन्तु यह अध्ययन भाषा - विशेष, काल - विशेष की परिधि में ही सम्भव है। काल - विशेष, भाषा - विशेष की सीमा का अतिक्रमण होते ही भाषा विज्ञान का क्षेत्र शुरू हो जाता है।

- स्पष्ट है कि व्याकरण — विवरणात्मक
  वर्णनात्मक

  भाषा विज्ञान — व्याख्यात्मक
  विश्लेषणात्मक

अर्थात् भाषा विज्ञान — भाषा सम्बन्धी नियमों और परिवर्तनों में कार्यकारण भाव की आकांक्षा रखता है। कार्य - कारण भाव स्थापना के कारण ही भाषा विज्ञान विज्ञान है।

पुस्तक — हिन्दी व्याकरण — स्त्रीलिंग
कोई कारण नहीं बताता, यह कारण बताता है भाषा विज्ञान। और क्या है कारण ——
संस्कृत के नपुंसक लिंग 'पुस्तक' शब्द का